शब्द

- एक या एक से अधिक वर्णों (अक्षरों) के मेल से बने स्वतंत्र सार्थक ध्वनि या वर्ण समूह को शब्द कहते हैं।
  जैसे-
  अभय, अरविन्द, अभिषेक आदि।
- ध्यान दें- सामान्य बोलचाल की भाषा में हम वर्ण एवं अक्षर शब्द का प्रयोग एक ही अर्थ के लिए करते हैं लेकिन विन्यास के समय इन दोनों में अन्तर स्पष्ट होता है।
  जैसे-
  राहुल = र् + आ + ह् + उ + ल् + अ
  इस राहुल शब्द में 3 अक्षर रा, हु, ल जबकि वर्ण 6 हैं- र, आ, ह, उ, ल, अ।

वर्ण-

- ध्वनियों के लिखित रूप या उस मूल ध्वनि को वर्ण कहा जाता है जिसके खण्ड न हो सके। वर्ण बोला जाने वाला छोटे-से-छोटा टुकड़ा है।
  जैसे-
  अ, इ, क्, ख्, ग्..........ज्ञ्।
- कही-कहीं पर 'वर्ण' शब्द के लिए 'ध्वनि' शब्द का प्रयोग मिलता है। इन ध्वनियों अर्थात् वर्णों को लिखने के लिए जिन 'लिपि चिह्नों' का प्रयोग किया जाता है उन्हें लिपि कहते हैं। हमारी हिन्दी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।

अक्षर-

- अक्षर अर्थात् जिसका क्षर न हो सके। जिस ध्वनि या ध्वनि समूह का उच्चारण एक साँस अर्थात् एक ही प्रयास में होता है, उन्हें अक्षर कहा जाता है। जैसे- (क, ख, ग, घ,........ज्ञ)
- नोट- सभी स्वर ध्वनियाँ 'वर्ण' और 'अक्षर' दोनों होते हैं।
- किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों के समूह को उस भाषा का शब्द भण्डार कहते है। प्रत्येक भाषा का शब्द भण्डार घटता-बढ़ता रहता है।

शब्दो का वर्गीकरण -

1. उत्पत्ति या स्त्रोत के आधार पर
2. व्युत्पत्ति या रचना के आधार पर
3. अर्थ के आधार पर
4. प्रयोग के आधार पर

1. उत्पत्ति/स्रोत के आधार पर शब्द भेद (4 भेद)

- हिन्दी का शब्दकोश अत्यधिक विशाल है। इसमें अनेक भाषाओं के शब्द समय के साथ जुड़ते रहे है। इनमें कुछ शब्द संस्कृत, अरबी, तुर्की, फारसी, अंग्रेसी, फ्रांसीसी आदि भाषाओं से आये है। इस आधार पर हिन्दी भाषा के शब्दों को 4 वर्गों में बांटा जा सकता है।

(i) तत्सम शब्द।

(ii) तद्भव शब्द।

(iii) देशज शब्द।

(iv) विदेशी शब्द/विदेशज शब्द।

(1) तत्सम शब्द- तत्सम यानि तत् (उसके) + सम(समान)। तत्सम् शब्द का अर्थ ही है उसके समान अर्थात संस्कृत के समान।

- जो शब्द संस्कृत भाषा से हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के ज्यो-के-त्यों ले लिए गए हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं।

जैसे-

आम्र, हरिद्रा, गोमल (गोमय), सूचि आदि।

(ii) तद्भव शब्द- तद्भव→ तत् (उससे) + भव (होना)। तद्भव शब्द का अर्थ है 'उससे होना' अर्थात् संस्कृत से (उत्पन्न) होना।

- जो शब्द संस्कृत' और 'प्राकृत' से विकृत होकर हिन्दी में आए हैं, वे तद्भव शब्द कहलाते हैं अर्थात् जो शब्द रुप परिवर्तन के बाद संस्कृत से हिन्दी में आए हैं, वे सभी शब्द तद्भव शब्द कहलाते हैं।

जैसे-

आम, हल्दी (हरदी), गोबर, सूई आदि।

(ii) देशज शब्द- देशज→ देश + ज (जन्मा) अर्थात् देश में जन्म लेनी वाली भाषा। जिन शब्दों की उत्पत्ति का पता नहीं चलता है, उन्हें देशज शब्द कहा जाता है। ये शब्द संस्कृत एवं विदेशी भाषाओं के शब्दों से अलग क्षेत्रीय प्रभाव के कारण परिस्थिति एवं आवश्यकतानुसार बनकर स्वतः प्रचलन में आ जाते हैं।

जैसे-

भोंदू, थप्पड़, भोंपू, झाड़ू, पगड़ी, ठेठ, झोला, तेन्दुआ, चिड़िया, कटरा (घास फूस के बने छप्पर को रखने वाली दीवाल), ठठेरा, कटोरा, खिड़की, ठुमरी, जूता, कलाई, खिचड़ी, डिबिया, डोंग, पेड़, डाब, छोरा, खर्राटा, खचाखच, थोथा, फुनगी, खखरा, अंटा, लोटा, चसक, लथपथ, पेट, धड़ाम आदि।

(iv) विदेशी शब्द- कुछ ऐसे शब्द हैं जो विदेशी भाषाओं से हिन्दी भाषा में आ गए हैं। ऐसे शब्दों को विदेशी/विदेशज शब्द कहते हैं।

विदेशी भाषा के अन्तर्गत हमें अंग्रेजी, फारसी, अरबी, तुर्की, पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच, रूसी आदि भाषाओं का अध्ययन करना है।

- **अंग्रेजी भाषा के शब्द-** अपील, ऑफीसर, आइसक्रीम, इंजीनियर, डॉक्टर, हॉस्पिटल, टिकट, स्टेशन, ट्रेन, पुलिस, कैप्टेन, लैनटर्न, थियेटर, बॉटल, रेल, कम्पनी, कॉलेज, पिक्चर, सिनेमा, बैंक, गार्ड, टाई, पैंट, स्कूल, टेलीफोन, जज, रजिस्टर, डिग्री, कोर्ट, डायरी आदि।
- **अरबी भाषा के शब्द-** अखबार, आजाद, इत्र, कागज, कानून, किताब, जुलूस, जलसा, तारीफ, तकिया, तमाशा, तकदीर, तबियत, गरीब, खुफिया, कुरान, तारीख, वकील, मुहावरा, कबीर, मरीज, रिश्वत, तूफान, जिक्र, हैजा, जुर्माना, शराब, कुर्सी, तुर्की, रोजा, हिसाब, अमीर, हक, हुक्म, अक्ल, इस्तीफा, अल्ला, उम्र, एहसान, वारिस, मशहूर, मुसाफिर, मौलवी, मौसम, मुकदमा, कीमत, खबर, नशा, मदद, दगा, औलाद, औरत, औसत, कब्र, कैदी, गैर, राय, आदमी आदि।
- **फारसी भाषा के शब्द-** आसमान, अफसोस, आतिशबाजी, अदा, आबरु, अनार, आवाज, आवारा, आईना, आफत, उम्मीद, कबूतर, कुश्ती, किशमिश, कमरबंद, किनारा, खरगोश, खुश, गिरफ्तार, गवाह, बीमार, सितार, सौदागर, लश्कर, बेरहम, दीवार, गुलाब, गुल, चाबुक, गोला, गरम, चश्मा, चरखा, चूँकि, चेहरा, नामर्द, तनख्वाह, चिराग, मलाई, मुर्गा, दवा, जादू, जिंदगी, जागीर, जिगर, तरकश, जोश, तमाशा, सरकार, सरदार, शोर, हफ्ता, खाल, खामोश, ताजा, चादर, पैमाना, मलीदा आदि।
- **पुर्तगाली भाषा के शब्द-** आलपीन, आलमारी, तम्बाकू, बाल्टी, फीता, कनस्तर, तौलिया, साबुन, चाबी, फीता, कमरा, काजू, गोदाम, गोभी, पादरी, परात, पिस्तौल, बुताम, मस्तूल, मेज, लबादा, साया, गमला, इस्पात, इस्तिरी, अलकतरा, अनन्नास, सागू, अचार, आलू, परात, पतलून आदि।
- **तुर्की भाषा के शब्द-** कुरता, कैंची, चाकू, तोप, बंदूक, बारुद, बेगम, कुली, चेचक, उर्दू, मुगल, बहादुर, तमगा, कुर्की, लाश, सौगात, चमचा, उजबक, कालीन, तलाश, लफंगा, सुराग, आका, आगा, काबू, दारोगा, बावर्ची आदि।
- **फ्रांसीसी (फ्रेंच) भाषा के शब्द-** बिगुल, कर्फ्यू, कूपन, कारतूस, बेसिन, रेस्त्रा, रिपोर्ताज।
- **चीनी भाषा के शब्द-** चाय, चीन, चीकू, लीची, तूफान।
- **जापानी भाषा के शब्द-**रिक्शा, झम्पान, सायोनारा।
- **तिब्बती भाषा-** चुंगी।
- **मलय भाषा के शब्द-** खोपरा।
- **डच भाषा के शब्द-** बम, तुरुप, ड्रिल।
- **स्पेनिश भाषा के शब्द-** सिगरेट।
- **ग्रीक भाषा के शब्द-** यूनानी, अकादमी।

- **रूसी भाषा का शब्द-** जार, बोतका, स्तूपनिक, सोवियत, रूबल, बुजुर्ग।
- **संकर शब्द-** ऐसे शब्द जो दो भाषाओं के शब्दों को आपस में मिलाकर बना लिए गए हो, संकर शब्द कहलाते हैं।

जैसे-

छायादार = छाया (संस्कृत) + दार (फारसी)

रेलगाड़ी = रेल (अंग्रेजी) + गाड़ी (हिन्दी)

टिकटघर = टिकट (अंग्रेजी) + घर (हिन्दी)

अश्रुगैस = अश्रु (हिन्दी) + गैस (अंग्रेजी)

पानदान = पान (हिन्दी) + दान (फारसी)

सीलबंद = सील (अंग्रेजी) + बंद (फारसी)

वर्षगाँठ = वर्ष (संस्कृत) + गाँठ (हिन्दी)

जाँचकर्ता = जाँच (हिन्दी) + कर्त्ता (संस्कृत)

अपीलकर्ता = अपील (अंग्रेजी) + कर्ता (संस्कृत)

उड़नतश्तरी = उड़न (हिन्दी) + तश्तरी (फारसी)

उद्योगपति = उद्योग (संस्कृत) + पति (हिन्दी)

बसअड्डा = बस (अंग्रेजी) + अड्डा (देशी)

आपरेशन कक्ष = आपरेशन (अंग्रेजी) + कक्ष (संस्कृत)

बेढ़गा = बे (फारसी) + ढ़गा (देशी)

सजाप्राप्त = सजा (फारसी) + प्राप्त (संस्कृत)

बमवर्षा = बम (डच) + वर्षा (हिन्दी)

2. व्युत्पत्ति/रचना/बनावट के आधार पर शब्द-भेद (3 भेद)

(i) रुढ़ शब्द

(ii) यौगिक शब्द

(iii) योगरुढ़ शब्द

(i) रुढ़ शब्द- जिन शब्दों के सार्थक खण्ड न किए जा सके अर्थात जिन शब्दों के खण्ड कोई सार्थक (निश्चित) अर्थ न प्रकट करते हों उन्हें रुढ़ शब्द कहते हैं।

जैसे- आज, कल, पर, नाक, कमल आदि।

'आ' और 'ज', 'क' और 'ल', 'प' और 'र' टुकड़े के रूप में कोई सार्थक अर्थ नहीं प्रकट कर पा रहे हैं। अतः ये निरर्थक शब्द हैं।

(ii) यौगिक शब्द- ऐसे शब्द जो दो सार्थक शब्दों के मेल से बने हों, वे यौगिक शब्द कहलाते हैं। इनके खण्ड सार्थक होते हैं।

जैसे-

विद्यालय = विद्या + आलय

हिमालय = हिम + आलय

पुस्तकालय = पुस्तक + आलय

(iii) योगरूढ़ शब्द- ऐसे शब्द जो यौगिक तो होते हैं, किन्तु अपने सामान्य अर्थ को न प्रकट करके किसी परम्परावश विशेष अर्थ को प्रकट करते हैं। ऐसे शब्द योगरुढ़ शब्द कहलाते हैं।

जैसे-

(1) पंकज पंक + ज जहाँ 'पंक' का अर्थ कीचड़ और 'ज' का अर्थ जन्मा है अर्थात् कीचड़ में जन्म लेने वाला (कमल)

(2) दशानन = दश (दस) + आनन (सिर) अर्थात रावण

अन्य उदाहरण- जलज, दंबोदर, चक्रपाणि, मुरलीधर।

- नोट- बहुव्रीहि समास के उदाहरण योगरुढ़ शब्द होते हैं।

3. अर्थ के आधार पर (2 भेद)-

(i) सार्थक शब्द

(ii) निरर्थक शब्द

(i) सार्थक शब्द- जिन शब्दों का कुछ-न-कुछ अर्थ हो वे सार्थक शब्द कहलाते हैं।

जैसे-

रोटी, पानी, ठण्डा आदि।

(ii) निरर्थक शब्द- जिन शब्दों का अपना कुछ अर्थ नहीं होता निरर्थक शब्द कहलाते हैं। इन शब्दो को अपभ्रन्श शब्द भी कह सकते है।

जैसे-

वोटी, वानी, वण्डा आदि।

- नोट- सार्थक शब्दों के साथ ही निरर्थक शब्दों का प्रयोग साधारण बोलचाल के रूप में किया जाता है।

जैसे-

1. पानी-वानी ले आओ।
2. रोटी-वोटी दे दो।
3. डण्डा-वण्डा कहाँ है।

अर्थ की दृष्टि से शब्दों के 5 भेद किए गए है -

1. एकार्थी शब्द
2. अनेकार्थी शब्द
3. समरूपी भिन्नार्थक शब्द
4. पर्यायवाची या समानार्थी शब्द
5. विपरीतार्थक या विलोम शब्द

1.एकार्थी शब्द - जिन शब्दो का केवल एक ही अर्थ होता है।

जैसे -

कमल, क्यारी, दुकान, मेज़, पुस्तक

2. अनेकार्थी शब्द - जिन शब्दो के एक से अधिक अर्थ निकलते है।

जैसे -

अंक - संख्या, नंबर, क्रमांक, निशान, चिह्न, छाप, गोद, क्रोड,

अंचल - छोर, सिरा, किनारा, प्रदेश, इलाका, क्षेत्र

3. समरूपी भिन्नार्थक शब्द - ऐसे शब्द जो सुनने में एक से लगते है परन्तु अर्थ की दृष्टि से भिन्न हो।

जैसे -

अकथ - जो कहा न जा सके

अथक - बिना थके

अनल - आग

अनिल - हवा

4. पर्यायवाची या समानार्थी शब्द - ऐसे शब्द जिनका सामान अर्थ के रूप मे प्रयोग किया जा सके।

जैसे -

अंधकार - तम, तिमिर, कालिमा, अँधेरा, तमिस्त्र

आकाश - अंबर, गगन, नभ, व्योम, शून्य

माता - अंबा, जननी, माँ, धात्री, जन्मदात्री

- पर्यायवाची मे सूक्ष्म अर्थ की दृष्टि - पर्यायवाची मे समान अर्थ होते हुये भी सूक्ष्म भेद पाया जाता है।

  जैसे -

  अभिमान - संपत्ति या अन्य कोई श्रेष्ठता के कारण स्वयं को बड़ा मानना।

  अहंकार - झूठा घमण्ड

  अनुग्रह - कृपा अनुकंपा- दया

5. विपरीतार्थक या विलोम शब्द - ऐसे शब्द जो किसी शब्द का ठीक उल्टा अर्थ बतलाते हो।
जैसे -

शब्द	विलोम
मीठा	कड़वा
कायर	वीर
घृणा	प्रेम
क्रय	विक्रय

4. प्रयोग/रुप के आधार पर शब्द-भेद (दो भेद)

(i) विकारी शब्द
(ii) अविकारी शब्द

(i) विकारी शब्द- जिन शब्दों में लिंग, वचन और कारक के आधार पर उसके रूप में विकार अर्थात परिवर्तन होता रहता है, उसे विकारी शब्द कहते हैं। विकारी शब्द के 4 भेद होते हैं।

- संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण विकारी शब्द होते हैं, क्योंकि इनके रूप में लिंग, वचन और कारक के आधार पर परिवर्तन किया जा सकता है।

1. संज्ञा - लड़का, लड़की,
2. सर्वनाम - वह, वे, उसने, उसे
3. विशेषण - बुरा, अच्छा, बुरें
4. क्रिया - थी, थे, था

(ii) अविकारी शब्द- जिन शब्दों में लिंग, वचन और कारक के आधार पर उसके रुप में विकार अर्थात् परिवर्तन नहीं होता उसे अविकारी शब्द कहते हैं। अविकारी शब्द के 4 भेद होते है।

- क्रिया-विशेषण, संबंध बोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादि बोधक ये चारों अविकारी शब्द होते हैं, क्योंकि इनके मूल रूप में लिंग, वचन और कारक के आधार पर परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

1. क्रियाविशेषण - हां, जल्दी, कहां, क्यों कब
2. संबंधबोधक - पर, ऊपर, तक, निकट, पास
3. समुच्चयबोधक - तथा, और, कि, क्योंकि, परंतु
4. विस्मयादिबोधक - वाह, आह, ओह, छिः

- नोट- इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विकार के आधार पर शब्द 8 प्रकार के होते हैं जिन्हें दो भागों में विकारी और अविकारी में बाँट कर उसका अध्ययन किया जाता है।